सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 173

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई शक : 37
मार्च – 2019

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः॥

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

Patron
Anand Bapshet

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

गुरूबंधु भगिनियों से,

पिछले अंक से आगे –

अब आपको कौन–सी जिम्मेदारी निभानी है?तो वृक्षों के समान दूसरों के दोष धारण करके वे अपनी नित्य साधना द्वारा विसर्जन करने है। वृक्ष आपके कल्याणार्थ जो सेवा कर रहे है वह अपना धर्म समझकर करते है। इसी तरह आपने भी यह कार्य अपना धर्म समझकर करना है। आपके बिना मांगे निसर्ग ने, ईश्वर ने आपको सब कुछ दिया है परन्तु आपको उसकी कीमत समझ नहीं आती। आप किसी के पीछे दर–दर भटकते है और फिर उसने भीख में दो आने दिए तो आप कहते है कि वह कितना 'उदार' है! फिर ईश्वर क्या 'उधार' है? अगर दो आने देने वाले को आप 'उदार' कहते है तो ईश्वर को क्या कहना चाहिए?

आज सब लोग कहते है, "हमारी यूनियन है।" आज सभी की 'यूनियन' है परन्तु 'यूनियन' का अर्थ क्या है?केवल 10 लोग इकठ्ठा होना मतलब यूनियन नहीं है बल्कि किसी एक विचार पर चार लोगों के विचार एक करना मतलब यूनियन है। अगर सबके कल्याण का कोई एक सुदृढ़ विचार है तो उससे चार लोगों को जोड़ना मतलब यूनियन है परन्तु आज केवल 10 लोगों को इकट्ठा करने को यूनियन कहा जाता है। वैसे मेरी भी यह यूनियन ही है केवल उसका नाम क्या रखना है यह आप बताइए। 'दत्तगुरु यूनियन' कह सकते है। जब एक आचार के, एक विचार के और एक ही कर्त्तव्य का पालन करने वाले लोग एकरूप तथा एकत्रित हो जाएंगे तब वह सही यूनियन होगी। वरना आज कल केवल

शोर करने के लिए ही यूनियन होती है।

मैंने अभी आपको एक महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी की पहचान कराई है। वह है – कारणदीक्षापरत्वे दूसरों के दोष खुद में धारण करके वे उपासना द्वारा विसर्जित करना और यह जिम्मेदारी निभाने का कार्य करने की शक्ति बढ़ाने के लिए नियमितता से ॐकार साधना करना और मेरे बताए अनुसार 'गुरुपाकृशीर्वाद' द्वारा काया, वाचा, मन का एकरूपत्व करना। मतलब काया, वाचा मन को जीवन कार्यार्थ एक उचित स्तर पररखना है। मैंने आपको यह बताया है कि काया, वाचा, मन इन तीनों माध्यमों को भिन्न–भिन्न गति है इसलिए जब काया ईश्वर के पास बैठती है तब वहाँ वाचा और मन नहीं आते और जब मन सत्कर्म करना चाहता है तब काया वहाँ नहीं जाती। अपने गुरुबंधु ने 'जो पिंड में है वही ब्रह्मांड में है' इससे संबंधित मुलाकात में आपको काया, वाचा, मन की गति की भौतिक शास्त्र के अनुसार पहचान कराई है। उसके अनुसार काया की गति, वाचा की गति और मन की गति इनका अनुमान करना आपके विचारों के परे है। अगर इन तीन माध्यमों की गति इतनी अधिक है तो इन तीनों माध्यमों को जिस दीक्षा ने खुद में समा लिया है उस दीक्षा की गति कितनी होगी?यह निष्कर्ष अब आपने निकालना है! यह सब विज्ञान के अनुसार आपको बताने का उद्देश्य यह है कि काया, वाचा, मन इन तीनों की भिन्न–भिन्न गति को खुद में धारण करके आपको आपके लिए पोशक ऐसी गति देना यह कार्य जिस दीक्षा का है उस दीक्षा की खुद की गति कितनी होगी इसका आपको विचार करना चाहिए और इस दीक्षा को धारण करने के लिए नियमित रूप से ॐकार साधना करनी चाहिए।

आज कोई भी 'साधना' करने में सबसे बड़ी अड़चन होती है जगह की यानी स्थान की लेकिन जिसे साधना करने की भूख लगी है उसे जगह की अड़चन महसूस नहीं होगी इतनी आसान और सुलभ ॐकार साधना और ॐकार का कार्य मैंने आपको दिया है। कुछ साल पहले जब मैं पूना में अपने रिश्तेदार के घर में रहता था तब वहाँ भी ऐसी ही जगह की अड़चन थी। तब मैं क्या करता था?उस समय का यानी 1940 का पूना शहर आपने देखा होगा तो उस समय पूना में पर्वतों के आस–पास आबादी नहीं थी। मैं तब तिलक रोड़ पर रहता था। रोज शाम को मैं घूमने के लिए पर्वतों पर जाता था और वहाँ एक पेड़ के नीचे शांति से बैठकर अपनी ॐकार साधना करता था। उसके बाद मैं मिलीटरी में गया तब अलग–अलग जगह पर हमारे कैम्पस् लगते थे। उस समय भी डयूटी समाप्त होने के बाद शाम को मैं कैम्प के बाहर जाकर वहाँ खुली जगह में शांति से बैठकर ॐकार करता था। अब यहाँ गोवा में भी लोग मिलने आते है इसके कारण घर में शांति का वातावरण नही होता इसलिए मैं मांडवी नदी के पुल पर जाकर वहाँ पर दोनों हाथ एक–दूसरे पर रखकर (विसक करके) मतलब पॉजिटिव–निगेटिव एक करके खड़ा रहता हूँ और ॐकार करता हूँ।

आप जहाँ रहते हैं वहाँ आस–पास खुली जगह या उद्यान होगा। दिन भर की आपकी जिम्मेदारियाँ पूरी होने के बाद उस खुली जगह में या उद्यान में जाकर वहाँ शांति से बैठकर ॐकार कीजिए। शाम को आप किसी क्लब में या किसी दोस्त के घर जाकर वहाँ दूसरों की आलोचना करते है या टी. वी. या सिनेमा देखते है। इसके बजाए अगर आप किसी उद्यान में बैठकर वहाँ

ॐकार साधना करोगे तो आप वह स्थान शुद्ध करोगे। आपके बच्चे उसी उद्यान में खेलने जाते है और खेलने के बाद कुछ खाने की जिद करते है। जब वे भेल, पकौड़े आदि कुछ खाकर घर आते है तो पेट में दर्द हो रहा है इसलिए चीखते, चिल्लाते है और फिर आपको उन पर से रोटी के टुकड़े उतारने पड़ते है। मतलब वह उद्यान शुद्ध करना आवश्यक होता है।

आज शाम को हम सब इस हॉल के ऊपर छत पर ॐकार साधना करेंगे तब आप देखिए आपको क्या अनुभव होता है। खुले वातावरण में यानी निसर्ग (प्रकृति) में हम वही ॐकार साधना करेंगे जो हम रोज यहाँ हॉल में करते है, तब आप इन दोनों के अनुभवों में क्या फर्क है?यह समझ पाओगे और फिर आपको स्वाभाविक रूप से यह चाहत निर्माण होगी कि हफ्ते में एक बार बाहर जाकर निसर्ग में ॐकार साधना करनी चाहिए।

अब तक आप अनेक अलग–अलग प्रकार की साधना करके, जिद करके, आपके काया, वाचा, मन को एकरूप करने का प्रयत्न कर रहे थे। आपने आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक ऐसी तीनों प्रकार की उपासनाओं का अवलंबन किया था लेकिन आप अपनी काया, वाचा, मन को एकरूप नहीं कर पाए। ऐसा क्यों? निसर्ग नियम के अनुसार इन तीनों माध्यमों को अलग–अलग गति है और प्रत्येक माध्यम अपनी गति के अनुसार अपना कार्य करते है इसलिए काया, वाचा, मन एकरूप करने के लिए इनमें से प्रत्येक माध्यम एक ही गति पर अति प्रयत्न करके लाना चाहिए या इन तीनों माध्यमों की गति 'गुरुविणे नाही अन्य गति' अर्थात गुरु के बिना अन्य गति नहीं है इस तरह करनी चाहिए। पिछले सेमीनार में आपको यह सवाल पूछा था कि सबसे श्रेश्ठ मुक्ति कौन–सी है?'कृपा के लिए पात्र होना' यह सबसे श्रेष्ठ मुक्ति है और कौन–सी वाणी श्रेष्ठ है?'गुरुवाणी' सबसे श्रेष्ठ वाणी है। अगर आपने इस जन्म में अपने विचार से किसी भी साधना मार्ग का अवलंबन किया तो भी निसर्गतः आपकी देह की गति में आपके जो कुछ कार्य होते है वे सुसंबद्धता से एक गति में लाना आपके लिए संभव नहीं है। फिर यह कैसे होता है?इसका जवाब इस प्रकार है –

मैं मुलाकात लेते समय क्या करता हूँ?यहाँ अनेक क्षेत्र के लोग उपस्थित है। उन सभी को समझ आएगा, अर्थबोध होगा ऐसा ही मैं आपको बताता हूँ। क्या मैं ऐसा कोई विषय आपको बताता हूँ जो किसी को भी परिचित नहीं है?तो नहीं। काया, वाचा, मन इन तीनों माध्यमों की गति भिन्न–भिन्न है और वह कार्यकारण रूप से कार्य करके आपमें विषमता निर्माण करती है और आपके लिए जो संतुलन (समतोलता) आवश्यक है वह आपमें निर्माण होने में रूकावट डाल रही है। इस काया, वाचा, मन की गति पर कैसे नियंत्रण होता है?आपमें से अनेक लोगों का यह प्रश्न है कि काया की एक गति है, उससे अधिक वाचा की गति है और उससे भी अधिक मन की गति है। इस तरह से काया, वाचा, मन इनकी गति एक–दूसरे की गति से अनेक गुणा गतिमान है, उन्हें एकरूप करना या उन्हें एक विशिष्ठ स्तर पर कार्यान्वित करना यह साधना मार्ग की दृष्टि से कितना मुश्किल है?लेकिन यहाँ गुरुमार्ग में काया, वाचा और मन की गति पर गुरुकृपा से नियंत्रण किया जाता है। यह किस तरह होता है?देखिए – अगर विचारपरत्वे काया इस माध्यम द्वारा यदि किसी कार्य का अनुभव करना है और ऐसे समय मन गतिमान स्थिति में जाकर काया अवस्था के कार्य में

विघ्न डालने वाला है तो ऐसे समय गुरुकृपा से मन की गति पर नियंत्रण रखा जाता है। इसी तरह जब मन की गति कार्यान्वित होती है तब अगर उसमें मंद गति की काया के कारण रूकावट निर्माण हो रही है तो ऐसे समय काया को मन की गति से एकरूप किया जाता है।

इस बात का उदाहरण यह है – अब आप ॐकार साधना करते है। इसके पहले आपने इसी काया से पूजा, अर्चना, जाप इत्यादि विधि किए है, उस समय आपने क्या अनुभव किया?उस समय आपका मन इधर–उधर भागता था। आपने अनेक प्रयत्नों से मन को नियंत्रित करने की कोशिश की लेकिन आपका मन एक क्षण के लिए भी स्थिर नहीं रहता था। आप यह ॐकार साधना कितने समय तक करते हैं? आधा घंटा या 40 मिनट। क्या यह ॐकार साधना आपके लिए पर्याप्त है या कम है? यह साधना आपके लिए पर्याप्त है क्योंकि साधना के 30 से 40 मिनट आप केवल साधना में ही होते है, आपका मन अन्य विषयों की ओर नहीं भागता। मतलब ॐकार साधना में गुरुकृपा से आपके काया, वाचा, मन की गति एकरूप होकर वह साधना की गति से एकरूप हो जाती है, यह 'गुरुकृपाशीर्वाद की भूमिका' है। आपके काया, वाचा, मन की गति को नियंत्रित करने का कार्य कितनी शास्त्रशुद्ध पद्धति से 'गुरुकृपा' कर रही है इसका आप विचार कीजिए! क्या यह विषय आप समझ गए है?गुरुकृपाशीर्वाद इस माध्यम द्वारा आपकी ॐकार साधना के लिए पोषक ऐसा कार्य आपके बिना जाने किस तरह से किया जाता है यह आप समझ लीजिए। अगर आपने 'गुरुकृपाशीर्वाद' के बिना अपने काया, वाचा, मन इन माध्यमों का इष्ट विकास करना तय किया तो वह आपको किसी भी जन्म में संभव नहीं है।

Information (सूचना)

Dear Guru Bandhu/ Guru Bhagini,

Hope you have already received an invitation of 2019 Seminar which is going to be held at Delhi w.e.f. 17th May to 19th May 2019. From 20th may Kamkaaj will start.

Please be kind to intimate of your presence.

।। शुभं भवतु।।

सेवक

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी। अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com dadab6@gmail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible